ISSN: 2349-7637 (Online)
Volume-1, Issue-2, September 2014
RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal
Research Paper

# निरंकारी मिशन की शिक्षाओं का जीवन में प्रयोग

डॉ.राज नारायण व्यास

दर्शन शास्त्र विभाग, राज. डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर (राज.)

**नि**रंकारी मिशन के दर्शन का जीवन में प्रयोग तीय धरा पर जब जब नैतिक मूल्यों का पतन हुआ और धर्म के नाम पर प्रभावी हुवे और मानवता कराहने लगी तब तब किसी न किसी महापुरूष ने इस जन्म लेकर मानवता और मानव समाज को दःखो के उस महासागर से निकाल का बीड़ा उठाया। संतो ने उस समय की विभीषकाओं और सामाजिक और त समस्याओं से पूरे समाज को बचाने का कार्य किया। उन्हीं महान विभूतियों की काया में हमारी संस्कृति आज तक अपनी जड़ो से जुडी हुई है। हमारे नैतिक धर्म का एक नवीन स्वरूप के रंग में रंगा आज संत निरंकारी मिशन के रूप में हमारे सामने स्थित है। संत निरंकारी मिशन हमारे प्राचीन श्रुति वाक्यों के आधार पर मानव मात्र को के वास्तविक स्वरूप व ब्रह्मतम प्रदान करने का एक प्रयास है। निरंकारी मिशन का मूत आग्रह सभी को यह बताना है कि मानव को प्रत्येक कार्य ब्रह्म का और ब्रह्म के लिये ही मानकर करना चाहिये। भिन्न भिन्न जातियों, धर्मों और सम्प्रदायों के भेद को समाप्त कर एक ही विश्व जाति अथवा मानव जाति की प्रतिस्थापना निरंकारी मिशन का किसी भी प्रकार के बाह्य भेद का खण्डन करता है और उनके स्थान पर मानव धर्म की लेयर लक्ष्य है। श्रुति प्रमाणों तथा संतों की वाणियों व तर्कों द्वारा मिशन मानव-मानव में स्थापना करता है। सभी प्रकार की कुरीतियों व अंधविश्वासों का विरोध निरंकारी मिशन ने दरता व ओजस्विता के साथ किया है। भेद को छोड़ अभेद व अद्वैत की नींव पर अहिंसा कलम से निरंकारी मिशन के मानव धर्म का अद्भुत व साकार चित्रण आज विराट पवित्र संतोष सरोवर में स्त्री पुरूष अलग अलग किंतु साथ में स्नान करते है। कोई किसी की जाति न तो जानता है, न जानना चाहता है। जाति के आधार पर यहां किसी भी स्तर पर भेद भाव नहीं होता। सद्गुरू का सम दृष्टि संदेश सब हृदय से पालन करते है। निरंकारी मिशन के सभी सदस्य विवाह में किसी जाति बंधनों को स्वीकार न करके उदारता पूर्वक अर्न्तजातीय विवाह को अपनाते है।

इस तरह आत्मिक ज्ञान के आधार पर निरंकारी मिशन व्यक्ति को व्यक्ति से एका रखने का उपदेश देता है। उनमें किसी भी रंग, जाति, क्षेत्र, वर्ण व वर्ग के आधार पर संदभाव की आज्ञा नहीं देता। इस प्रण में तीन बातें महत्वपूर्ण है (1) अभेद दृष्टि (2) कार त्याग (3) सहिष्णुता।

"इस प्रकार संतों-महापुरूषों का आपस में मिलकर बैठना, बोली-भाषा-जाति के भेदभाव के बिना मिल-जुलकर रहना, हर प्राणी को आदर देना, सभी की मान्यताओं का सम्मान करना ही इस मिशन का उद्देश्य है। महापुरुष सदा ही नम्रता और भाईचारे के क होते हैं। आज निरंकारी मिशन पुरातन महापुरुषों के सपने और भावना को साकार कर रहा है। हमने आगे भी इन गुणों को अपनाए रखना है। 48 3. तृतीय प्रण

विभिन्न व्यक्तियों के रहन-सहन और खान-पान भी भिन्न-भिन्न होते हैं धरती पर जगह चूंकि एक जैसी नहीं है और ना ही उनके मौसम और जलवायु ही एक सी है। व्यक्ति जिस स्थान पर रहता है उसका खान-पान और पहनावा उसी स्थान के होता है। जैसे भारत में ही राजस्थान के मरुस्थलीय इलाकों का मौसम भारत के भागों से अलग है। जहां राजस्थान में गर्मी अधिक पड़ती हैं वहीं पहाड़ी इलाकों में सर्दी पड़ती है और समुद्री किनारों पर बसे इलाकों में मौसम सम रहता है। इस भारत में ही एक साथ सभी प्रान्तों में अलग अलग संस्कृतियों व रहन सहन और न का विकास हुआ। चूंकि सभी स्थानों की स्थितियां एकदम अलग हैं इसलिये सहन और खान पान भी अलग अलग है।

इसलिये संत निरंकारी मिशन ने अपने तीसरे प्रण में यह व्यवस्था की है कि किसीक् के रहन सहन, खान पान के तौर तरीकों और काम में ली जाने वाली वस्तुओं से मीपणा न करे और अपने खान पान को उच्चता देकर अहंकार न करे। अन्यथा गुरु द्वितीय प्रण निरंकारी मिशन मानता है कि जाति और वर्ण का भेद राष्ट्र की अखण्डता तथा को कई भागो में चीर कर रख देता है। जाति प्रथा के कारण सारा समाज कई ओटी छोटी इकाईयों में बंट जाता है जिससे सभी एक दूसरे को अपने से अलग मानने लग जाते हैं और समाज का विकास वहीं रूक जाता है क्योंकि विकास वही होगा जहां योग और एकता होगी। लेकिन जाति प्रथा की संकीर्णता के कारण सहयोग तो दूर, आपस में झगडे व फसाद ही होते रहते है। गुरूदेव हरदेव के शब्दों में-

किसी भी प्रकार की तरक्की के लिये देश में अमन एकता का होना अनिवार्य है। मानव एकता के फलस्वरूप ही शांति का माहौल बनता है और इस माहौल में ही कोई आदमी तरक्की की चाह को पूर्ण कर सकता है। निरंकारी मिशन आज सही संदेश दे रहा है कि यदि हम अपने और अपने देश की


2014, RHIMRJ, All Rights Reserved
ISSN: 2349-7637 (Online)

तरक्की चाहते है तो हमें अपने देश में एकता और शांति स्थापित करनी होगी। एकता और शांति की प्राप्ति की उपलब्धि के लिये हमें एक की एक जानना है, एक को एक कर मानना है।

युगपुरूष अवतार सिंह का ध्यान जातिवाद की उन हानियों की और गया तो उन्होंने देखा कि समाज का एक बहुत बड़ा हिस्सा जाति, धर्म और वर्ण के नाम पर एक दूसरे पर कारोप-प्रत्यारोप लगा रहा है तथा उनमें वैर वैमनष्य की भावनायें समुद्र की भयानक लहरों की भांति उठती और एक दूसरे पर गिरती रहती हैं जिससे राष्ट्र रूपी टापू के किनारे टूटते चले जा रहे है। इसलिये उन्होंने राष्ट्र की एकता तथा विश्व बंधुत्व के ख्याल से यह प्रेम करने को अनिवार्यतः लागू किया कि जाति वर्ण नहीं मानेंगे।

करण हेतु कई ठोस कदम उठा रहा है और मिशन अनेक उल्लेखनीय लक्ष्यों को प्राप्त वर्तमान में भी निरंकारी मिशन जाति-पाति, वर्ण, धर्म आदि से उपजे दोषों के करने में सफल हुआ है। कुछ क्रियाकलाप निम्न है :

निरंकारी मिशन में जाति-पांति की अर्थहीनता राजनीति या सामाजिक सुधार की भावना से प्रेरित नहीं है बल्कि इस आत्मिक ज्ञान के आधार पर है कि हिन्दु मुस्लिम, ईसाई-कोई भी हो सभी एक ही मालिक के बंदे है।

सामूहिक भोजन व्यवस्था प्रायः संगतो में और समागमों में सामूहिक और विशाल रूप से की जाती है।

समदाय की करे, बल्कि उसका उद्देश्य उन सभी विचार धाराओं को एक मंच आकाश की ऊचाइयों तक विस्तृत हो संत निरंकारी मिशन का कभी यह लक्ष्य नहीं रहा कि वह किसी नये धर्म या दान करना है जो ब्रह्मज्ञान की ओर जाने का मार्ग बतलाती है। उस परम ब्रह्म निरंकार चुका 1 ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास ही निरंकारी मिशन का आधारभूत मिशन है लेकिन दीक्षा पाकर भी वह मिशन का पूरा लाभ प्राप्त नहीं कर पायेगा। निरंकारी मिशन सभी के रहन सहन वालों को हरि का संग देता है और उन्हें खान पान व रहन सहन के ये तरीके बताता है। 51

**चतुर्थ प्रण :**
दीक्षा से पूर्व दिये जाने वाले प्रण में यह महत्वपूर्ण प्रण है जो संत निरंकारी मिशन श्री अनूठी विशेषता है। इसमें दीक्षा लेने वाले को यह प्रण करना पड़ता है कि ज्ञान भक्ति के लिये मैं कभी भी गृह त्याग नहीं करूंगा। वेषधारी संत बनकर अन्य के आश्रित नहीं मा। स्वयं कर्म करके अपनाऔर अपने परिवार का भरण पोषण करूंगा। भिक्षा कभी नहीं अगा और अपने मन की भी संत बनाऊंगा केवल तन को नही।

निरंकारी मिशन मुक्ति ज्ञान से स्वीकार करता है किन्तु कर्म का त्याग वह मोकार नहीं करता। परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करने के लिये तथा भक्ति का प्रसाद पाने के निये व्यक्ति को अपना घर छोडने, घर-घर भिक्षा मांगने, गृहस्थी को त्यागने, तथा गुफाओं जंगलों में रहकर गेरुए वस्त्र धारण करने की कोई आवश्यकता नहीं है। क्योंकि वह घट घट वासी है उसे खोजने के लिये और कहीं जाने की आवश्यकता ही नहीं है गुरुदेव हरदेव के शब्दों में :

इस तरह चौथा प्रण यह चाहता है कि व्यक्ति ज्ञान व प्रभु के लिये कर्म का त्याग द अपने कर्तव्यों का त्याग न करे। मेहनत करके खुद अपना पालन करें, किसी पर भी या समाज पर बोझ ना बने तथा अपने परिवार का भी पालन करे। पंचम प्रण

संत निरंकारी मिशन में दीक्षा से पूर्व अन्तिम प्रण यह करवाया जाता है कि व्यक्ति प्राप्त करने के बाद सदैव अपने मन में निरंकार का ध्यान करता रहेगा जिनका या ज्ञान गुरू उसे कराएंगे। तथा वह व्यक्ति (दीक्षित) किसी और व्यक्ति को के ज्ञान से दीक्षित नहीं कर सकेगा। जब तक कि वह सद्गुरू से ऐसा करने की नहीं पा लेता। क्योंकि जैसे कोई एक दिन में सभी शास्त्र पढकर विद्वान नहीं बन बहुत सा खाकर मोटा नहीं हो सकता। वैसे ही अवतार सिंह कहते है कि कोई भी ब्रह्मज्ञानी जाय और लोगों को दीक्षा देने योग्य हो जाय यह सम्भव नहीं है। एक दिन सुनार के साथ रहकर गहने बनाना नही सीख सकता वैसे ही कोई दीक्ष
2 द्वितीय प्रण निरंकारी मिशन मानता है कि जाति और वर्ण का भेद राष्ट्र की अखण्डता तथा को कई भागो में चीर कर रख देता है। जाति प्रथा के कारण सारा समाज कई ओटी छोटी इकाईयों में बंट जाता है जिससे सभी एक दूसरे को अपने से अलग मानने लग जाते हैं और समाज का विकास वहीं रूक जाता है क्योंकि विकास वही होगा जहां योग और एकता होगी। लेकिन जाति प्रथा की संकीर्णता के कारण सहयोग तो दूर, आपस में झगडे व फसाद ही होते रहते है। गुरूदेव हरदेव के शब्दों में-


*2014, RHIMRJ, All Rights Reserved*
*ISSN:* 2349-7637 (Online)

किसी भी प्रकार की तरक्की के लिये देश में अमन एकता का होना अनिवार्य है। मानव एकता के फलस्वरूप ही शांति का माहौल बनता है और इस माहौल में ही कोई आदमी तरक्की की चाह को पूर्ण कर सकता है। निरंकारी मिशन आज सही संदेश दे रहा है कि यदि हम अपने और अपने देश की तरक्की चाहते है तो हमें अपने देश में एकता और शांति स्थापित करनी होगी। एकता और शांति की प्राप्ति की उपलब्धि के लिये हमें एक की एक जानना है, एक को एक कर मानना है। 7

युगपुरूष अवतार सिंह का ध्यान जातिवाद की उन हानियों की और गया तो उन्होंने देखा कि समाज का एक बहुत बड़ा हिस्सा जाति, धर्म और वर्ण के नाम पर एक दूसरे पर कारोप-प्रत्यारोप लगा रहा है तथा उनमें वैर वैमनष्य की भावनायें समुद्र की भयानक लहरों की भांति उठती और एक दूसरे पर गिरती रहती हैं जिससे राष्ट्र रूपी टापू के किनारे टूटते चले जा रहे है। इसलिये उन्होंने राष्ट्र की एकता तथा विश्व बंधुत्व के ख्याल से यह प्रेम करने को अनिवार्यतः लागू किया कि जाति वर्ण नहीं मानेंगे।

करण हेतु कई ठोस कदम उठा रहा है और मिशन अनेक उल्लेखनीय लक्ष्यों को प्राप्त वर्तमान में भी निरंकारी मिशन जाति-पाति, वर्ण, धर्म आदि से उपजे दोषों के करने में सफल हुआ है। कुछ क्रियाकलाप निम्न है :

निरंकारी मिशन में जाति-पांति की अर्थहीनता राजनीति या सामाजिक सुधार की भावना से प्रेरित नहीं है बल्कि इस आत्मिक ज्ञान के आधार पर है कि हिन्दु मुस्लिम, ईसाई-कोई भी हो सभी एक ही मालिक के बंदे है।
सामूहिक भोजन व्यवस्था प्रायः संगतो में और समागमों में सामूहिक और विशाल रूप से की जाती है।

निरंकारी मिशन के अनुयायी एक निराकार परमात्मा के ज्ञान और भक्ति पर एक म है लेकिन अपने सामाजिक जीवन को अपनी धारणाओं और परम्पराओं के अनुसार जीने में स्वतंत्र है। इसीलिये किसी भी धर्म या सम्प्रदाय की परम्पराओं के साथ निरंकारी मिशन का न तो कोई संबंध है और न ही उनसे कोई विरोध है। सर्व धर्म समभाव की भावना को साकार रूप देने तथा विश्व बंधुत्व को स्थापित करने के लिये मिशन ने सांसारिक जीवन से सम्बन्धित पांच नियम बनाये है। ये नियम पंच प्रण के नाम से जाने जाते है "

ब्रह्मज्ञान देने से पूर्व सद्गुरू पांच प्रण लेता है। वेदान्त में ज्ञान प्राप्ति से पूर्व जो महत्व साधन चतुष्टय को प्राप्त है वही स्थान संत निरंकारी मिशन में पांच प्रण को प्राप्त है। युगपुरूष बाबा अवतार सिंह जी ने ब्रह्मानुभूति हेतु पांच प्रणों की अनिवार्यता और महत्व पर प्रकाश डालते हुये अपनी अवतार वाणी में लिखा है :-

परहेज के बिना दवा जैसे प्रभावी नहीं होती वैसे ही जो जिज्ञासु पंच प्रणोंकापालन नहीं करता उसे गुरु के द्वारा दिये गये यथार्थ ज्ञान का बोध भी नहीं होता । उनके अनुसार (1) सत्कार के बिना संत कृपा नहीं होती (2) संत कृपा के बिना गुरु प्राप्ति नहीं होती (3) गुरू में श्रद्धा और विश्वास बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता (4) ज्ञान बिना मन स्थिर नहीं होता (5) गुरू के द्वारा दिये गये पांच प्रणों को दृढ़ता से पालन किये बिना मन में यथार्थ ज्ञान नहीं टिकता ।

पांच प्रणों को पढकर और मनन करके पाठक स्वयं यह जान सकते है कि युगपुरूष बाबा अवतार सिंह जी ने समाज की आवश्यकता को भांप कर अपनी अलौकिक आत्मिक शक्ति से ही इन पांच प्रणों को सभी लोगों के सामने प्रस्तुत किया था जिनमें उच्च कोटि का दर्शन निहित है। जो एक और तो समाज के निर्माण में सहायक हुये तो दूसरी ओर व्यक्ति को ब्रह्मज्ञान का अधिकारी बनाने में हेतु बने। इस तरह ये पंच प्रण समाज के लिये भी उपयोगी है और व्यक्तिगत जीवन के लिये भी उपयोगी है। प्रथम प्रण :--

अवतार वाणी हमारे सामने प्रस्तुत करती है। वाणी में संत अवतार सिंह जी कहते है कि. कार के सभी विवाद और हिंसा, तन मन धन के अहंकार से ही पैदा होते है। इसी कारण ब्रह्मानुभूति के लिये पांच प्रणों में तन मन धन के समर्पण को प्रथम प्रण के रूप में मानव में प्रेम नहीं दिखायी देता। गुरूदेव हरदेव के शब्दों में निराकार के ज्ञान के साथ साथ साकार ब्रह्म-गुरु की भक्ति निरंकारी मिशन का प्रथम सोपान है।

गृहस्थ सन्यासी निरंकारी भी निरंकारी मिशन की एक प्रमुख विशेषता है। निरंकारी संतों के समाज में ब्रह्मज्ञानी भी है तथा ब्रह्मज्ञानी गृहस्थ भी है। इस समाज में ब्रह्मज्ञान के बिना समाज में प्रवेश नहीं मिलता और समाज में प्रवेश करने के बाद गृहत्याग को मान्यता नहीं दी जाती। अर्थात सभी कार्य करते हुये हृदय में निरंकार रहता है। निरंकार गृहस्थ के सभी दायित्व निभाते है समाज के सभी कार्यों में सक्रिय भागीदारी निभाते है। वर्तमान परिवेश में निरंकारी मिशन का जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। हमारे प्राचीन शास्त्रो ने अगर वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा जगत को दी तो निरंकारी


*2014, RHIMRJ, All Rights Reserved*
*ISSN:* 2349-7637 (Online)

मिशन से इससे आगे विश्वबंधुत्व का नारा बुलंद किया है। विश्व बंधुत्व के मार्ग में आने वाले सभी अभिकरण चाहे वे धर्म हो, सम्प्रदाय हो या जाति निरंकारी मिशन को मान्य नहीं है।

इस तरह धर्म के नाम पर मानव जाति का विभाजन निरंकारी संतो को किसी भी रूप में स्वीकार नहीं है। आज पृथक पृथक सम्प्रदाय, विभिन्न प्रकार की पूजा पद्धतियों के कारण एक दूसरे का विरोध करते परिलक्षित होते है। ईश्वर के अनेक रूप बनाकर एक अखण्ड परमात्मा को भी विभिन्न प्रकारों और रूपों में स्थापित किया गया है। मानव समाज की ऐसी विषम स्थिति में समाज के रोग का भली भांति निदान करके निरंकारी संतो व गुरुओं ने किसी मूर्त रूप ईश्वर को पूजने के स्थान पर निराकार परब्रह्म की आराधना को ही मान्यता दी है और अलग-अलग धर्मों व सम्प्रदायों के स्थान पर सिर्फ मानव धर्म का प्रचार किया। निरंकारी मिशन ने यह अनुभव किया की उपास्य की दृष्टि से जो भी भेद है वह सब साकार में है निराकार में नहीं। इसलिये उन्होंने वर्तमान की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुये प्रभु का सर्वश्रेष्ठ नाम निरंकार ही घोषित किया।

मिशन के सिद्धान्तों ने विभिन्न वर्गों, मान्यताओं, विश्वासों के धर्म प्रेमियों को प्रभावित किसी भी नाम से पुकारा जाता हो, एक है और इस एक को साकार सद्गुरु की कृपा से किया। ये सभी धर्म प्रेमी जो यह मानते हैं कि परमात्मा जिसे राम, अल्लाह, अकाल पुरख, जाना जा सकता है, वे सभी इस मिशन में सम्मिलित होते जा रहे है। विभिन्न सभ्यताओं, आस्थाओं संस्कृतियों को एक सूत्र में बांध कर मानव परिवार का एक गुलदस्ता सजाना इस मिशन के लिये कोई शाब्दिक विलास मात्र नहीं है बल्कि क्रियान्वयन की सूची का प्रथम विषय है।"


*2014, RHIMRJ, All Rights Reserved*
*ISSN:* 2349-7637 (Online)